ii) धुंआ धंवर ⇒

कवि ने धुआ धंवर के अन्तर्गत शीत ऋतु का वर्णन किया गया है, वर्षा ऋतु के पश्चात शीत ऋतु के आगमन का वर्णन कवि ने अपने भावों को अभिव्यक्त किया है, वर्षा ऋतु के पश्चात चारों तरफ हरियाली का वातावरण होता है सभी कुंए. बावडीयाँ और तालाब भरे हुए रहते है, धरती पानी से तृप्त होती है खेतों में गेहूं चना व सरसों की फसल खडी होती है. प्रकृति का वातावरण मोहक होता है तो ऐसे में दिन छोटे व रातें बड़ी होती है. सूर्य का तापमान सामान्य से कम होने लगता है' जिसके कारण शीत ऋतु का आभास होने लगता है. इस समय जो हवा चलती है उसमें ठण्डक होती है, जिसके कारण सर्दी का अनुभव होता है' सूर्य की गर्मी के कारण जमीन से वाष्प बनती है वो कम गर्मी होने के कारण आसमान तक नही पहुंचती है इसलिए वो वातावरण में नीचें ही फैल जाती है। यही वाष्प रात को धुंध के रूप में दिखाई देती है।

⟹ प्रातःकाल सूर्य उदय तक का वातावरण धुंध का ही दिखाई देता है, सूर्य उदय के पश्चात यही वाष्प तपन के कारण यह धुंध में परिवर्तित हो जाती है. जैसे जैसे वातावरण में ठण्डक बढती है वैसे-वैसे धुंध का प्रभाव भी बढता जाता है। यही प्रभाव शीत का जोर बढाता है' जिसके कारण दिन व रात का तापमान बहुत कम हो जाता है' और सूर्य की तेज गर्मी भी बहुत कम हो जाती है' इस प्रकार वह समझते है कि कार्तिक मास से....

Scanned by CamScanner

पोष मास वन शीत ऋतु की प्रचण्डता होती है, इस शीत ऋतु का प्रकृति पर भी प्रभाव पड़ता है अत्यधिक सर्दी होने पर हरे पेड़-पौधे झुलसने लगते है उनकी पत्तियां काली पड़ जाती है और खेतों में धुंध व ओस के कारण व सूर्य की गर्मी नहीं मिलने से खेतों में पाला पड़ जाता है, पाला पड़ने पर फसलें नष्ट हो जाती है इस प्रकार प्रकृति का जो रूप अच्छा होते हुए भी अच्छा नहीं दिखता है शीत ऋतु में प्रकृति के परिवर्तन के साथ ही मानव जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है शीत ऋतु में अत्यधिक सर्दी होने से किसान को काम करने में परेशानीयां आती है। खेतों पर जाकर खरपत वार को हटाना पड़ता है और किसान को पहनने के कपड़े भी नहीं होते है, जिससे शीत ऋतु से बचाव हो सके। एवं इससे शारिरिक कष्ट होता है

→ पाला पड़ने के कारण फसले नष्ट हो जाती है तो मेहनत का फल नहीं मिल पाता है, एवं उसके भरण-पोषण की व्यवस्था दुःख दाई हो जाती है" बुर्जुग लोग शीत ऋतु में शारीरिक कष्ट भोगते है अत्यधिक सर्दी में पहनने और बिछाने के लिए वस्त्र का कम होना और कष्टदायक हो जाता है। और बच्चों को भी कपड़ों एवं भोजन की कमी के कारण कष्ट होता है जिसके चलते माँ ठण्ड से बचाने का प्रयास करती है महिलाओं का दुःख और उनकी परेशानियां परिवार के लिए भोजन बनाना पड़ता हो पशुओं का ध्यान रखना एवं घर के कार्य करने पड़ते हो

Scanned by CamScanner

एवं बच्चों का ध्यान रखना पड़ता है। इस प्रकार देखा जाए तो ग्रामीण परिवेश के लोगों का दुःख कष्टदायक होता है जबकि शहरों में रहने वाले लोग आनन्द से रहते हैं। शीत ऋतु का पूरा लाभ उठाते हैं।

⟹ शीत ऋतु में पक्षी अपने घोंसलों में दुबक के रहते हैं। सूर्य की चुप के बाद ही वे घोंसले छोड़कर दाने-पानी के लिए बाहर आते हैं, पशु भी एक-दूसरे से सटकर झुंड में बैठे रहते हैं ताकि उन्हें गरमाहट का एहसास होता रहे।

⟹ "इस प्रकार कवि ने शीत ऋतु का वर्णन किया है"

Scanned by CamScanner

मुरधर मंगल ⇒

→ शीत ऋतु के पश्चात कवि ने मुरधर मंगल के अन्तर्गत प्रकृति में होने वाले परिवर्तन के साथ-साथ मानव जीवन में त्यौहार शादी, उत्सव और पारिवारिक आयोजन आदि का वर्णन किया है। ग्रामीण परिवेश के समस्त दुःखो-सुखों का कवि ने वर्णन किया है।

→ कवि ने इस वर्णन को अपने भावो से अभिव्यक्त किया है।

→ शीत ऋतु में ही दीपावली जैसा बड़ा त्यौहार आता है शहरी सभ्यता जहाँ पर अपनी फैशन और धन के हिसाब से त्यौहार का आनन्द उठाते है, और वही त्यौहार का उल्लास ग्रामीण परिवेश में देखा जा सकता है। — जो कि संस्कार व परम्पराओं से इस त्यौहार को मनाते है। और इसका आनन्द लेते है।

→ ग्रामीण परिवेश के लोगों में आज भी प्रेम का जीवन है। जिसके कारण सभी सामुहिक रूप से त्यौहार की खुशियों को व्यक्त करते है और आनन्द की अनुभूति करते है। फिर साहे, व त्यौहार, होली, राखी, हो या पूनम या अमावस्या हो क्यो न हो हर त्यौहार का अपना आनन्द होता है। उसी आनन्द के कारण ग्रामीण परिवेश का भारत पुजा जाता है।

Scanned by CamScanner

ग्रामीण परिवेश में सच्चा सुख निहित प्रेम एवं प्रेम के लिए एक-दूसरे के लिए समर्पण करते हैं। सुख-दुख के सच्चे भागीदार किसी एक व्यक्ति का आयोजन पूरे परिवार और गाँव का आयोजन होता है एक की खुशी सभी की खुशी होती है और एक का दुख सभी का दुःख होता है। सभी लोग हिल-मिलकर कार्य करते हैं और अपने प्रेम व एकता का परिचय देते हैं।

→ इस प्रकार एकता व सम्पूर्ण सुख का रूप ग्रामीण परिवेश में ही देखा जा सकता है। इसके विपरित शहरी सभ्यता में आपसी प्रेम व भाईचारा देखने को नहीं मिलता है यहाँ पर तो केवल पैसे पर आधारित रिश्ते हैं और सब कुछ शहरी सभ्यता में बनावटीपन एवं दिखावा ही दिखाई देता है।

→ इसलिए खुशी से खुश व अपने दुख से दुखी दिखाई देते हैं किसी को किसी से कोई लेना-देना नहीं होता है।

इसलिए कवि ने शहरी सभ्यता से परें ग्रामीण परिवेश के सुख को ही सच्चे रूप में सुख माना है और ग्रामीण परिवेश ही मंगलकारी सुख है।

Scanned by CamScanner